

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उपखण्ड (ii)

PART II-Section 3-Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशिस

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 545]

नई बिल्लो, शुक्रवार, बिसम्बर 23, 1977/पौष 2, 1899

No. 545]

NEW DELHI, FRIDAY, DECEMBER 23, 1977/PAUSA 2, 1899

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती हैं जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

MINISTRY OF INDUSTRY

(Department of Industrial Development)

ORDER

New Delhi, the 23rd December 1977

S. O. 852 (E)./18AA/IDRA/77.—Whereas the Central Government is satisfied from the documentary evidence in its possession that the undertaking of Messrs National Rubber Manufacturers Limited, Calcutta (hereinafter referred to as the said industrial undertaking) has been closed for a period of not less than three months and that such closure is prejudicial to the concerned scheduled industry, namely, Rubber Goods industry and that the financial condition of the company owning the said industrial undertaking and the condition of the plant and machinery of the said undertaking are such that it is possible to restart the undertaking and such restarting is necessary in the interests of the general public;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by clause (b) of subsection (1) of section 18AA of the Industries (Development and Regulation) Act, 1951 (65 of 1951) the Central Government hereby authorises a body of persons (hereinafter referred to us the 'Authorised Person') consisting of—

Chairman

1. Shri J I. Mehta.

Members

- 2. Shri Subir Sen,
- 3 Shri P. V. Subba Rao,
- 4 Shrl S Bhattacharyya,
- 5. Shrl S. D Ganguli,

to take over the management of the said industrial undertaking, subject to the following terms and conditions, namely:—

- (1) the authorised person shall comply with all directions issued from time to time by the Central Government,
- (2) the authorised person shall hold office for a period of five years from the date of publication of this Order in the Official Gazette, and
- (3) the Central Government may terminate the appointment of the authorised person, earlier, if it considers it necessary to do so

This Order shall have effect for a period of five years commencing from the date of its publication in the Official Gazette

INO F. 2/44/77-CUC1

G. V RAMAKRISHNA, Addl. Secy.

उद्योग मंत्रालय

(ग्रौद्योगिक विकास विभाग)

भादेश

नई दिल्ली, 23 दिसम्बर, 1977

का० ग्रा० 852 (ग्र)/18कक/ग्राई डी ग्रार ए/77.—केन्द्रीय सरकार कां समाधान हो गया है कि उसके पास जो दस्ताबेजी साक्ष्य है उससे उसका समाधान हो गया है कि मैसर्स नैणनल रबर मैन्यूफैकचर्स लिमिटेड, कलकत्ता नामक उपक्रम (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त ग्रौद्योगिक उपक्रम कहा गया है) कम से कम तीन मास से बन्द कर दिया गया है भीर उसे बन्द करने से अनुसूचित उद्योग अर्थात रबड के सामान के उद्योग पर प्रतिकृत प्रभाव पडता है, ग्रौर उस कम्पनी की, जो उक्त ग्रौद्योगिक उपक्रम की स्वामी है, बित्तीय स्थित तथा उक्त उपक्रम के संयंत्र ग्रौर मशीनरी की दणा ऐसी है कि उपक्रम को फिर से चालू करना संभव है ग्रौर सामान्य जनता के हित में इस प्रकार उपका फिर से चालू किया जाना ग्रावश्यक है,

श्रतः, श्रव, केन्द्रीय सरकार, उद्योग (विकास ग्रौर विनियमन) श्रधिनियम, 1951 (1951 का 65) की धारा 18कक की उपधारा (1) के खण्ड (ख) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, व्यक्तियों के एक निकाय को (जिसे इसमें इसके पण्चात् प्राधिकृत व्यक्ति कहा गया है) श्रौर जिसमें निम्नलिखित व्यक्ति होगें —

1. श्री जे॰ म्राई॰ मेहता	श्रध्यक्ष
2. श्री सुदीर सेन	सदस्य
3. श्री पी० वी० सु ^ढ बारा व	सदस्य
4. श्री एस० भट्टाचार्य	सदस्य
5. श्री एस० डी० गागुली	सदस्य

उक्त भौद्योगिक उपक्रम के प्रबन्ध को निनलिखित निबन्धनों श्रीर शर्नों पर, श्रपने हाथ में ले लेने के लिए प्राधिकृत करती है, श्रर्थात् :—

- (1) प्राधिकृत व्यक्ति केन्द्रीय सरकार द्वारा समय-समय पर जारी किए गए सभी निदेशो का ग्रनुपालन करेगा;
- (2) प्राधिकृत व्यक्ति राजपन में इस मादेश के प्रकाशन की तारीख से पांच वर्ष तक के लिए पद धारण करेगा;
- (3) केन्द्रीय सरकार, यदि वह वैसा करना आवश्यक समझे तो, इससे पूर्व भी प्राधि-कृत व्यक्ति की नियुक्ति को समाप्त कर सकती है।
- 2. यह प्रादेश राजपत्न में प्रकाशन की तारीख से पांच वर्ष तक के के जिए प्रभावी होगा ।

[सं० फा० 2(44)/77 सी० यू० सी०] जी० वी० रामकृष्ण, श्रपर सिचव ।